Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 8, Issue 3&4 - 2023, Pg. No. 1-6
Peer Reviewed Journal

Research Article

हिन्दी का विश्व सन्दर्भः एक अंतदृष्टि

Ambikesh Dubey

शोधार्थी, भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली.

I N F O

E-mail Id:
ambikeshdubey123@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0009-0003-3003-7197

Date of Submission: 2023-07-03
Date of Acceptance: 2023-07-31

सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय कृत ''हिन्दी का विश्व सन्दर्भ'' पुस्तक पर केंद्रित है व इस शोध आलेख में हिंदी की वैश्विक उपस्थिति, हिन्दी की वर्तमान दशा एवं दिशा और विश्व स्तर पर हिन्दी का विकसित होता स्वरूप आदि पर चर्चा की गई है ।

मुख्य बिंदु: वैश्वीकरण, भूमण्डलीकरण, आधुनिकता, अन्तर्राष्ट्रीय आदि ।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध आलेख में प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है । जिसमें पुस्तकें, पत्रिकाएँ व अखबार शामिल हैं ।

डॉ. करूणाशंकर उपाध्याय जी लिखित ''हिन्दी का विश्व संदर्भ'' एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। पुस्तक में उन्होंने वैश्विक हिन्दी की वास्तविक स्थिति का अद्यतन संदर्भ का जिक्र किया है। जो कि काफी सूचनाप्रद है। इस पुस्तक में चौदह अध्यायों में हिन्दी के वैश्विक संदर्भ पर प्रकाश डाला गया है।

हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय सन्दर्भ

हिंदी ना केवल भारत में अपितु पूरे विश्व में बोली जाती है। हिंदी एक अंतरराष्ट्रीय भाषा है। अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर आदि देशों में भी बहुत बड़ी संख्या में भारतीय रहते हैं। ये विकसित देश हैं इसलिए इन देशों में इन लोगों को हिंदी के माध्यम से काम करने के कई साधन मिल जाते हैं। पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन, रेडियो, दूरदर्शन आदि के माध्यम से हिंदी के विभिन्न कार्यक्रम तथा शिक्षा में और सांस्कृतिक धरातल पर हिंदी को व्यवहार में लाते हैं।

भारत के पड़ोसी पाकिस्तान और नेपाल जैसे देशों में भी हिंदी समझी और बोली जाती है। पाकिस्तान के लोग उर्दू बोलते हैं लेकिन भाषिक समानता के कारण वे हिंदी भाषा बखूबी समझते हैं। इस तरह हिंदी भाशा अन्तर्राष्ट्रीय जगत में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। विश्व के अनेक देशों में हिंदी अध्ययन अध्यापन का कार्य जोरो पर है। उदाहरण के लिए ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, बेल्जियम, जर्मनी, फ्रांस, हंगरी अमेरिका आदि देशों में 100 के करीब अध्ययन केंद्रों में हिंदी के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था है।

मॉरीशस में 1926 ई. में हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई जिसके द्वारा तिलक विद्यालय की स्थापना हुई और जिसका उद्देश्य था हिंदी के व्याकरण सम्मत पढ़ाई कराना और जो बाद में 1946 में हिंदी भवन के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सूरीनाम में भारत वासियों की ओर से देशभर में हिंदी शिक्षण केंद्र स्थापित किए गए हैं। फिजी में पहली भारतीय पाठशाला की स्थापना सन 1916 में हुई। उसके बाद सनातन धर्म सभा, आर्य सभा, आर्य समाज, गुरुद्वारा कमेटी आदि ने अनेक पाठशालाएं खोलें और उनमें हिंदी शिक्षण का कार्य नियमित रूप से प्रारंभ हो गया।

नेपाल में त्रिभुवन विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर कक्षा तक हिंदी में अध्ययन की व्यवस्था है। वर्मा में 1918 में हिंदी शिक्षण आरंभ हुआ और हिंदी साहित्य सम्मेलन वर्तमान में भी सक्रिय है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी में साहित्य सृजन भी पर्याप्त हो रहा है। मॉरीशस में सन 1976 में दूसरा विश्व हिंदी सम्मेलन हुआ और 1993 में चौथा सम्मेलन हुआ। मॉरीषस सरकार का कला एवं संस्कृति मंत्रालय हर वर्ष विभिन्न भाषाओं के नाटकीय समारोह का आयोजन करता है, जिसमें सबसे अधिक हिंदी के नाटक होते हैं।

ब्रिटेन में भारतीय विद्या भवन महालक्ष्मी मंदिर और आर्य समाज आदि ने साहित्य सृजन की दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। साहित्यकारों में अभिमन्यु अनंत, कुसुम वेदी, श्रीमती उषा राजे और तेजेंद्र शर्मा प्रमुख हैं। हिंदी साहित्य का विश्व के अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है, जिनमें प्रेमचंद का 'गोदान', फणीश्वर नाथ रेणु का 'मैला आंचल' और तुलसीकृत 'रामचरितमानस' प्रमुख हैं। हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने में सिनेमा का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आज हिंदी सिनेमा ने विदेशों में भी अपनी पहुंच बनाई है, और हिंदी के वैश्विक परिदृष्य को पूरा किया है।

Copyright (c) 2023: Author(s). Advanced Research Publications

हिन्दी की वैश्विक उपस्थिति

आज का समय भूमंडलीकरण का है, जिसका असली चेहरा बाजार के रूप में हमारे सामने उपस्थित हुआ है। तेजी से फैलती बाजार–संस्कृति ने हमारी राष्ट्रीय अस्मिता, खानपान, पहनावा, भाशा, संस्कृति आदि को प्रभावित किया है। बच्चों के सपने में बाजार का प्रवेश हो चुका है। मनुष्य की अस्मिता सुरक्षित रखने के लिए भाषा एक सशक्त माध्यम है। आज दुनिया में लगभग साठ हजार भाषाएं किसी न किसी रूप में बोली और समझी जाती हैं, लेकिन आने वाले समय में नब्बे प्रतिशत से अधिक का अस्तित्व खतरे में है। भाषाओं के इस विलुप्तीकरण के दौर में हिंदी अपने को न केवल बचाने में सफल हो रही है, बल्कि उसका उपयोग–अनुप्रयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है। यह भाषा लगभग डेढ़ हजार वर्ष पुरानी है और इसमें डेढ़ लाख शब्दावली समाहित है। संप्रति हिंदी को अंतरराष्ट्रीय दर्जा प्राप्त है, क्योंकि यह अनेक विदेशी भाशाओं को न केवल स्वीकार करती, बल्कि विष्व की समस्त भाषाओं को आत्मसात करने की क्षमता रखती है। हिंदी के विकास के लिए विश्व की पैंतीस सौ विदेशी कृतियों का हिंदी में अनुवाद किया जा चुका है। यह संख्या भी कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। विश्व हिंदी का केंद्रीय सचिवालय मॉरीशस में बनना और हिंदी को प्रौद्योगिकी से जोड़ने के लिए किए जाने वाले सतत प्रयास इसे संयुक्त राष्ट्र की भाषाओं में स्थान दिलाने का प्रयास है। बाजार के कारण भी हिंदी का प्रचार–प्रसार व्यापक हो रहा है।

आज के वैश्विक फलक पर हिंदी स्वयं को एक संपर्क भाषा, प्रचार भाषा और राजभाषा के साथ–साथ वैश्विक भाषा के रूप में स्वयं को स्थापित करती जा रही है। देखा जाए तो विश्व में चीनी भाषा (मंदारिन) के बाद हिंदी का दूसरा स्थान है। जयंती प्रसाद नौटियाल अपने सर्वेक्षण में तो हिंदी को प्रथम स्थान पर पहुंचने की बात करते हैं। इस क्रम में अंग्रेजी आज तीसरे पायदान पर है। विश्व के लगभग एक सौ चालीस देशों के लगभग पांच सौ केंद्रों में हिंदी का अध्ययन–अध्यापन हो रहा है, जहां न जाने कितने विद्वान अपना योगदान दे रहे हैं। कंप्यूटर, मोबाइल और आइ–पैड पर हिंदी की पहुंच ने यह बात सिद्ध कर दी है कि आने वाले समय में इंटरनेट की भाषा अंग्रेजी न होकर हिंदी होगी।

अगर हिंदी के वैश्विक परिदृश्य पर बात करें तो जापान में हिंदी की पढ़ाई हिंदुस्तानी के रूप में सन 1908 से प्रारंभ हुई, जिसे ज्यादातर व्यापार करने वाले लोग पढ़ाया करते थे, पर बाद में इसका पठन–पाठन विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा किया जाने लगा। जापान में हिंदी का पठन–पाठन फिल्मी गीतों के माध्यम से किया जा रहा है। आज वहां सात एफएम रेडियो स्टेशन भारतीय संगीत का प्रसारण करते हुए जापान में हिंदी की उपस्थिति को दिखाते हैं। जापान में 1921 में नौ विदेशी भाषाएं पढ़ाई जाती थीं, जबकि आज इनकी संख्या छब्बीस हो चुकी है, जिसमें हिंदी भी शामिल है। अगर संख्या बल पर ध्यान दें तो पूरे यूरोप की आबादी पैंतीस करोड़ है, जबकि भारत की जनसंख्या लगभग एक सौ तीस करोड़ है। इस तरह अगर हमारे यहां पचास प्रतिशत आबादी हिंदी पढ़ती–लिखती है, तो वह पूरे यूरोप से कहीं ज्यादा है।

अमेरिका में हिंदी फिल्मी गीतों के माध्यम से पढ़ाई जाती है और प्रवासी भारतवंशी हिंदी की अलख और संस्कृति को जगाए रखे हैं। अमेरिका में हिंदी के विकास में चार संस्थाएं प्रयासरत हैं, जिनमें अखिल भारतीय हिंदी समिति, हिंदी न्यास, अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति प्रमुख हैं। अमेरिका की भाषा नीति में दस नई विदेशी भाषाओं को जोड़ा गया है, जिनमें हिंदी भी शामिल है। हिंदी शिक्षा के लिए डरबन में हिंदी भवन का निर्माण किया गया है और एक कम्युनिटी रेडियो के माध्यम से हिंदी का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है। वे सोलह घंटे सीधा प्रसारण हिंदी में देते हैं। इसके अलावा हिंदी के गाने बजाए जाते हैं। मॉरीशस में हिंदी का वर्चस्व है तथा उनका संकल्प हिंदी को विश्व भाषा बनाने का है। सन 1996 में वहां हिंदी साहित्य अकादमी की स्थापना हुई और उसकी दो पत्रिकाएं बसंत और रिमझिम प्रकाशित हो रही हैं। अब तक हुए ग्यारह विश्व हिंदी सम्मेलनों में से तीन मॉरीशस में आयोजित हुए हैं। हिंदी के प्रयोग को लेकर इसे छोटा भारत भी कहा जाता है। सूरीनाम में भी हिंदी का व्यापक प्रचार–प्रसार है।

दूर देश से निकलने वाली हिंदी पत्रिकाओं ने भी हिंदी को वैश्विक फलक पर ले जाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को बढ़ावा देने वाली संस्थाओं में अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति (संयुक्त राज्य अमीरात), मॉरीशस हिंदी संस्थान, विश्व हिंदी सचिवालय, हिंदी संगठन (मॉरीशस,) हिंदी सोसाइटी (सिंगापुर), हिंदी परिषद (नीदरलैंड) आदि ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। आज हिंदी जो वैश्विक आकार ग्रहण कर रही है उसमें रोजी–रोटी की तलाश में अपना वतन छोड़ कर गए गिरमिटिया मजूदरों के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता। गिरमिटिया मजदूर अपने साथ अपनी भाशा और संस्कृति भी लेकर गए, जो आज हिंदी को वैष्विक स्तर पर फैला रहे हैं। मसलन, एषिया के अधिकतर देषों चीन, श्रीलंका, कंबोडिया, लाओस, थाइलैंड, मलेषिया, जावा आदि में रामलीला के माध्यम से राम के चरित्र पर आधारित कथाओं का मंचन किया जाता है। वहां के स्कूली पाठ्यक्रम में रामलीला को शामिल किया गया है। हिंदी की रामकथाएं भारतीय सभ्यता और संस्कृति का संवाहक बन चुकी हैं। रेडियो सीलोन और श्रीलंकाई सिनेमाघरों में चल रही हिंदी फिल्मों के माध्यम से हिंदी की उपस्थिति समझी जा सकती है।

भाषा के वैश्विक संदर्भ की विशेषताएँ

आखिर, वे कौन सी विशेषताएँ हैं जो किसी भाषा को वैश्विक संदर्भ प्रदान करती हैं। ऐसा करके हम हिंदी के विश्व संदर्भ का वस्तुपरक विश्लेषण कर सकते हैं। जब हम हिंदी को विश्व भाषा में रूपांतरित होते हुए देख रहे हैं और यथावसर उसे विश्वभाषा की संज्ञा प्रदान कर रहे हैं, तब यह जरूरी हो जाता है कि हम सर्वप्रथम विश्वभाषा का स्वरूप विश्लेषण कर लें। संक्षेप में विश्वभाषा के निम्नलिखित लक्षण निर्मित किए जा सकते हैं:–

- उसके बोलने–जानने तथा चाहने वाले भारी तादाद में हों और वे विश्व के अनेक देशों में फैले हों।
- उस भाषा में साहित्य–सृजन की प्रदीर्घ परंपरा हो और प्रायः सभी विधाएँ वैविध्यपूर्ण एवं समृद्ध हों। उस भाषा में सृजित

कम–से–कम एक विधा का साहित्य विश्वस्तरीय हो।

- उसकी शब्द–संपदा विपुल एवं विराट हो तथा वह विश्व की अन्यान्य बडी भाषाओं से विचार–विनिमय करते हुए एक–दूसरे को प्रेरित –प्रभावित करने में सक्षम हो।
- उसकी शाब्दी एवं आर्थी संरचना तथा लिपि सरल, सुबोध एवं वैज्ञानिक हो। उसका पठन–पाठन और लेखन सहज–संभाव्य हो। उसमें निरंतर परिष्कार और परिवर्तन की गुंजाइश हो।
- उसमें ज्ञान–विज्ञान के तमाम अनुशासनों में वाङमय सृजित एवं प्रकाशित हो तथा नए विषयों पर सामग्री तैयार करने की क्षमता हो।
- वह नवीनतम वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धियों के साथ अपने–आपको पुरस्कृत एवं समायोजित करने की क्षमता से युक्त हो।
- वह अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक संदर्भों, सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक चिंताओं तथा आर्थिक विनिमय की संवाहक हो।
- वह जनसंचार माध्यमों में बडे पैमाने पर देश–विदेश में प्रयुक्त हो रही हो।
- उसका साहित्य अनुवाद के माध्यम से विश्व की दूसरी महत्त्वपूर्ण भाषाओं में पहुँच रहा हो।
- उसमें मानवीय और यांत्रिक अनुवाद की आधारभूत तथा विकसित सुविधा हो जिससे वह बहुभाषिक कम्प्यूटर की दुनिया में अपने समग्र सूचना स्रोत तथा प्रक्रिया सामग्री (सॉफ्टवेयर) के साथ उपलब्ध हो। साथ ही, वह इतनी समर्थ हो कि वर्तमान प्रौद्योगिकीय उपलब्धियों मसलन ई–मेल, ई–कॉमर्स, ई–बुक, इंटरनेट तथा एस.एम.एस. एवं वेब जगत में प्रभावपूर्ण ढंग से अपनी सक्रिय उपस्थिति का अहसास करा सके ।
- उसमें उच्चकोटि की पारिभाषिक शब्दावली हो तथा वह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की नवीनतम आविष्कृतियों को अभिव्यक्त करते हुए मनुष्य की बदलती जरूरतों एवं आकांक्षाओं को वाणी देने में समर्थ हो।
- वह विश्व चेतना की संवाहिका हो। वह स्थानीय आग्रहों से मुक्त विश्व दृष्टि सम्पन्न कृतिकारों की भाषा हो, जो विश्वस्तरीय समस्याओं की समझ और उसके निराकरण का मार्ग जानते हों।

वैश्विक संदर्भ में हिंदी की सामर्थ्य

जब हम उपर्युक्त प्रतिमानों पर हिंदी का परीक्षण करते हैं तो पाते हैं कि वह न्यूनाधिक मात्रा में प्रायः सभी निष्कर्षों पर खरी उतरती है। आज वह विश्व के सभी महाद्वीपों तथा महत्त्वपूर्ण राष्ट्रों– जिनकी संख्या लगभग एक सौ चालीस है– में किसी न किसी रूप में प्रयुक्त होती है। वह विश्व के विराट फलक पर नवल चित्र के समान प्रकट हो रही है। आज वह बोलने वालों की संख्या के आधार पर चीनी के बाद विश्व की दूसरी सबसे बडी भाषा बन गई है। इस बात को सर्वप्रथम सन 1999 में ''मशीन ट्रांसलेशन समिट' अर्थात् यांत्रिक अनुवाद नामक संगोष्ठी में टोकियो विश्वविद्यालय के प्रो. होजुमि तनाका ने भाषाई आँकडे पेश करके सिद्ध किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत आँकडों के अनुसार विश्वभर में चीनी भाषा बोलने वालों का स्थान प्रथम और हिंदी का द्वितीय है। अंग्रेजी तो तीसरे क्रमांक पर पहुँच गई है। इसी क्रम में कुछ ऐसे विद्वान अनुसंधित्सु भी सक्रिय हैं जो हिंदी को चीनी के ऊपर अर्थात् प्रथम क्रमांक पर दिखाने के लिए प्रयत्नशील हैं। डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल ने भाषा शोध अध्ययन 2005 के हवाले से लिखा है कि, विश्व में हिंदी जानने वालों की संख्या एक अरब दो करोड पच्चीस लाख दस हजार तीन सौ बावन (1, 02, 25, 10,352) है जबकि चीनी बोलने वालों की संख्या केवल नब्बे करोड चार लाख छह हजार छह सौ चौदह (90, 04, 06,614) है। यदि यह मान भी लिया जाय कि आँकडे झूठ बोलते हैं और उन पर आँख मूँदकर विश्वास नहीं किया जा सकता तो भी इतनी सच्चाई निर्विवाद है कि हिंदी बोलने वालों की संख्या के आधार पर विश्व की दो सबसे बडी भाषाओं में से है। लेकिन वैज्ञानिकता का तकाजा यह भी है कि हम इस तथ्य को भी स्वीकार करें कि अंग्रेजी के प्रयोक्ता विश्व के सबसे ज्यादा देशों में फैले हुए हैं। वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशासनिक, व्यावसायिक तथा वैचारिक गतिविधियों को चलाने वाली सबसे प्रभावशाली भाषा बनी हुई है। चूंकि हिंदी का संवेदनात्मक साहित्य उच्चकोटि का होते हुए भी ज्ञान का साहित्य अंग्रेजी के स्तर का नहीं है अतः निकट भविष्य में विश्व व्यवस्था परिचालन की दृष्टि से अंग्रेजी की उपादेयता एवं महत्त्व को कोई खतरा नहीं है। इस मोर्चे पर हिंदी का बडे ही सबल तरीके से उन्नयन करना होगा। उसके पक्ष में महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आज अंग्रेजी के बाद वह विश्व के सबसे ज्यादा देशों में व्यवहृत होती है।

हिन्दी वर्तमान स्थिति

वर्तमान समय में विश्व की बदलती हुई व्यवस्था को देखते हुए ऐसा लगता है कि 21 वीं शताब्दी भारत और चीन की होगी। दोनों परस्पर आयातक और निर्यातक होंगे। इसका मुख्य कारण है कि चीन द्व ारा अति कम लागत पर वस्तुओं का निर्माण करना तथा भारत के द्वारा सस्ती चीजों को खरीदना तथा उसका उपयोग करना। भारत विशाल जनसंख्या वाला देश है। यहाँ सस्ते सामानों की खपत सुरसा के बढ़ते हुए मुख की भाँति है। अतः इन दोनों के बीच सेतु का काम भाषा करती है और वह हिन्दी है। जो कि राष्ट्रभाषा की गंगा से विश्व भाषा का गंगा सागर बनने जा रही है।

डॉ. उपाध्याय के अनुसार पुस्तक में दी गई जानकारी के मुताबिक विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है। द्वतीय सोपान पर मंदार और तृतीय पादान पर अंग्रेजी है। इस वैश्वीकरण की दुनिया में हिन्दी जानने वालों की संख्या 1200 मिलियन है तथा मंदारिन जानने वालों की संख्या 1050 मिलियन है। अगर इस आँकड़े को सरल और सुबोध भाषा में व्यक्त किया जाय तो हिन्दी जानने वालों की संख्या 1 अरब 29 करोड़ 86 लाख 17 हजार 995 है। यह संख्या विश्व की कुल आबादी की 18ः है। यहाँ हर छठवाँ आदमी हिन्दी जानता है। इसका मुख्य कारण भारतीयों को दूसरे देशों में रोजी रोटी के लिए प्रवासन की दर का ज्यादा होना तथा भाषा संदूषण को होना।

हिन्दी एक समृद्ध भाषा है। इसका इतिहास लगभग 1200 वर्ष पुराना

है। इसके खजाने में काव्य साहित्य दूसरे दर्जे पर आसीन है। इसमें साहित्य सृजन अंधाधुन हो रही है। जैसे कि महानगरों में भवन का। हिन्दी माध्यम में अनके पाठ्यक्रम भी चलाए जाते है। बिहार, उ.प्र., राजस्थान एवं मध्यप्रदेश में अभियांत्रिकी पाठ्यक्रम हिन्दी में ही पढ़ाए जाते है। अंग्रेजी माध्यम मात्र भर है। इसका जीता जागता प्रमाण महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विष्वविद्यालय, वर्धा द्वारा हिन्दी माध्यम से एम.बी.ए तथा एल.एल.बी. की पढ़ाई का संचालन करना है। हिन्दी को ज्यादा सफल बनाने के लिए इसे रोजगार से जोड़ना उचित होगा। रोजगार अर्थव्यवस्था से जुड़ी होती है और अर्थव्यवस्था समृद्धि से। यही कारण है कि विदेशी उत्पादक अपने उत्पाद की जानकारी हिन्दी में लिखकर जनता के बीच अपनी खपत बढ़ा रहे हैं। इसके समानान्तर मीडिया क्षेत्र में भी बड़े–बड़े प्रकाशक अपने समाचार पत्र और पत्रिकाएँ हिन्दी में प्रकाशित कर रहे है। उदाहरण स्वरूप इकानॉमिक टाईम्स, बिजनेस स्टैंडर्ड, आऊटलेक और इंडिया टूडे है।

हिन्दी के प्रचार–प्रसार में मीडिया का भी बड़ा महत्व है। हमारी हिन्दी विश्व के विभिन्न हिस्सों में उपग्रह द्वारा प्रसारित चौनलों के जरिए घर घर में पहुँच रही है। इतिहास साक्षी है कि सन् 1935 ई. में रेवरेंड फादर कामिल बुल्के बेल्जियम निवासी गोस्वामी तुलसीदास की हिन्दी से प्रभावित होकर भारतीयता स्वीकर कर लिए थे। अतः हिन्दी का विश्व संदर्भ चारों ओर फैल रही है।

हिन्दी भाषा के उद्भव और अद्यतन विकास के संदर्भ में लेखक का मानना है कि हिन्दी का इतिहास काफी पुराना है। यह वैदिक काल से ही शुरु होता है जो कि ऋगवेद पर आश्रित है। यह मूलतः छन्दों से निर्मित है। छन्द लेखन का सर्वप्रथम महर्षि वाल्मीकि ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ रामायण में किया। 'हिन्दी' हिन्द शब्द का विशेषण है। जिसका अर्थ है हिन्द का। इस तरह हिन्दी अनेक कालों को पार कर आज अपना सिर ऊँचा कर विश्व पटल पर छाने जा रही है।

वर्तमान समय में प्रयुक्त भाषा मात्र 1000 वर्ष पुरानी है। इस पर विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं। भाषा वैज्ञानिक डॉ. हरदेव बाहरी की मान्यता है कि वैदिक भाषा ही सबसे पुरानी हिन्दी है। इस अध्याय में हिन्दी की संपूर्ण विकास यात्रा प्रस्तुत की गई है। हमारे प्रधानमंत्री हिन्दी के प्रचार–प्रसार को निरन्तर विश्व भाषा के रूप में गति प्रदान कर रहे हैं।

डॉ. उपाध्याय के अनुसार मॉरिशस में भी हिन्दी का बाहुल्य है। मॉरिशस को हिन्दी विरासत में मिली है। सन् 1832 से 1920 ई. के बीच भारत से एक अनुबन्धन के तहत करीब 4,50,595 मजदूर मॉरिशस लाए गए थे। वे मुख्य रूप में पूर्वी उत्तर प्रदेश या बिहार के थे। जिन्हें A, B, C, D के नाम से जाना जाता था। अर्थात आरा, बलिया, छपरा तथा देवरिया। उनकी मातृभाषा भोजपुरी थी। तथा वे हिन्दी भी जानते थे। तभी से वहाँ हिन्दी और भोजपुरी का बाहुल्य है। तथा सभी भारतवंशी हिन्दी बोलते और जानते हैं। ये सभी भारतीय संस्कृति का भरपूर पालन करते हैं। देश के आजादी के बाद हिन्दी तथा अन्य भाषाओं को बोलने वालों को मताधिकार का अधिकार मिला।

भारत के गिरमिटिया मजदूर ने अपने मेहनत के बदौलत वहाँ भी अपना खूंटा गाड़ दिया। मॉरिशस में 1948 में चुनाव हुआ। भारतवंशी 11 लोग विजयी हुए। पूर्वी क्षेत्र के लोगों में इतनी विद्ववत्ता और लगन था कि वे अपनी योग्यता के बदौलत 12 मार्च, 1968 में भारतवंशी सर शिवसागर वहाँ के प्रथम प्रधानमंत्री बने। वे बिहार के आरा के रहने वाले थे। सन् 1976 ई. में मॉशिस में द्वतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसका उद्घाटन शिवसागर गुलाम जी ने ही किया था। तदन्तर 24 से 29 फरवरी, 2009 में द्वितीय विश्व भोजपुरी सम्मेलन का आयोजन हिन्दी की बहुलता को बतलाता है। हिन्दी को विश्व स्तर की भाषा और इसे मान्यता दिलाने के लिए 2007 में विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना हुई। तथा हिन्दी का पहला अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी पत्र विश्व हिन्दी समाचार यहाँ से प्रकाशित होती है।

मॉरिशस में भी हिन्दी सर्व दिशाओं में गतिशील है। संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को स्थान दिलाने के लिए हिन्दी भाषी देश सतत प्रयत्नशील है। संयुक्त राष्ट्र संघ में कामकाज की भाषा भी हिन्दी होनी चाहिए। अगर वह संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बन जाती है तो उनके आधार पर विश्व व्यापी भाषा बन जाएगी। इसे अधिकारिक भाषा बनाने के लिए सतत प्रयत्नशील है।

वर्तमान समय में संयुक्त राष्ट्र संघ की छः अधिकारिक भाषा है (1) अंग्रेजी (2) अरबी (3) चीनी (4) फ्रेंच (5) रूसी (6) स्पेनिश। यह अत्यन्त ही दुर्भाग्य की बात है कि विश्व की सबसे बड़ी भाषा होने के बावजूद भी हम इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषा नहीं बना पाए है।

लेखक ने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी की अधिकारिक भाषा जैसे विषय पर उसके पक्ष में अनेक विचार दिये है। जिसके आधार पर यह निश्चित रूप से तय किया जा सकता है कि वर्तमान वैश्विक परिवेश इसके सर्वथा अनुकुल है। इसके लिए भारत सरकार की तरफ से विश्वव्यापी अभियान चलाने की जरुरत है। अमेरिका में हिन्दी पत्रकारिता का उल्लेख इस पुस्तक में मिलता है। सन् 1913 में 'गदर' नामक साप्ताहिक पत्रिका हिन्दी, उर्दू और पंजीबी में प्रकाशित हुआ था।

वर्तमान समय में विश्व हिन्दी न्यास की ओर से हिन्दी जगत पत्रिका का संपादन होता है। इसके प्रधान संपादक डा. राम चौधरी जी वैज्ञानिक लेख प्रकाशित करते हैं। करीब एक दशक पूर्व इसकी एक प्रति मुझे भी देखने और पढ़ने के लिए मिली थी। इस तरह "विश्व विवेक" इत्यादि अन्य पत्रिकाएँ वहाँ छपकर हिन्दी का नाम रौशन कर रही है। वहाँ की पत्रकारिता व्यवसायिक नहीं है। हजारो मील दूर रह कर भी उन्हें अपने देश की भाषा और संस्कृति से प्रेम है। हिन्दी में प्रकाशित पत्रिकाएँ इसी बात का द्योतक है। विश्व हिन्दी न्यास और भारतीय विद्याभवन जैसे संस्थान अमेरिका में हिन्दी को उचित दर्जा दिलाने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ है।

21 वीं शदी में हिन्दी के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं, आवश्यकता इस बात की है कि हम हिन्दी के प्रति अपने दायित्वों को समझे तथा उसे जीवन के प्रत्येक मोड़ पर सक्रिय रूप से निभाएँ। जैसे घर

में किसी भी अवसर पर निमंत्रण पत्र हिन्दी में छपवाना हिन्दी के सुन्दर एवं स्वच्छ साहित्य को खरीदना एवं पढ़ना तथा आचरण में लागू करना। समाचार पत्र हिन्दी खरीदना चाहिए। सभी सरकारी एवं निजी पत्राचार राष्ट्रभाषा हिन्दी में करना चाहिए। यह हम सभी भारतीयों का कर्तव्य है। विदेशों में बहुत सारे शक्तिशाली देश अपनी देश की भाषा के लिए बहुत सारा धन खर्च करते हैं और दिल से करते हैं। इसके लिए सरकार एक काफी मजबूत समिति का गठन करे और उस समिति का उत्तरदायित्व होगा कि विश्व में हिन्दी की स्थिति का आकलन करें। इस कार्य के विद्वानों विशेषज्ञों एवं शिक्षा विदों से मदद ली जा सकती है।

अमेरिका में आठवाँ हिन्दी सम्मेलन में मौजूद रहने का सौभाग्य डा.उपाध्यायजी को भी मिला। भारत से अनेकानेक लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए पधारे थे। हम भारतीय विश्व के किसी कोने में रहें लेकिन अपनी भाषा, भोजन और संस्कृति को हमेशा दिल में सहेज कर रखते है। इसका सबसे बड़ा और मनोरम दृश्य पुस्तक पढ़ने के बाद तब जान पड़ा जब कि लेखक महोदय आबूधावी में विमान की सीढ़ियों से उतरते समय एक कर्मचारी से अंग्रेजी में संवाद करने पर जवाब हिन्दी में मिला। वह हिन्दी भक्त और कहीं का नहीं जौनपुर उत्तर प्रदेश का रहने वाला था।

इस तरह शेख का हिन्दी बोलना हिन्दी व्यवसाय से जुड़ने की सार्थकता को दर्शाती है। अमेरिका तो विश्व में सर्वोपरि है तथा सर्वगुण संपन्न है। वहाँ की कंचन, कामिनी और कादम्ब भी अतुलनीय है। कई बार राजनीति या कूटनीति के तौर पर दो देशों के बीच रिश्ते सुन्दर नहीं रहते हैं। रिश्तों में कटुता रहती है। किन्तु आम आदमी सर्वथा इसके विपरित होता है जैसे कि एक पाकिस्तानी टैक्सी चालक के द्वारा भारती प्रतिभागी से पैसा नहीं लेने के लिए राजी नहीं होना।

आज हिन्दी को काफी ऊँचाईयों तक ले जाने की जरुरत है। हिन्दी में अभी तक अभियांत्रिकी, चिकित्सा, संगणक, सूचना एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित अच्छी किताबें उपलब्ध नहीं है। जिसके फलस्वरूप जिनकी बुनियादि शिक्षा हिन्दी माध्यम से हुई है वे अंग्रेजी में लिखी किताबों का लाभ नहीं उठा पाते है। अतः संबंधित विशेषज्ञ बनने में अड़चन होती है।

अमेरिका में भी आठवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन हुआ। इसमें भी कुछ नए नए प्रस्ताव पास किए गए। किन्तु ये प्रस्ताव अभी तक संयुक्त राष्ट्र में कार्यान्वित नहीं हो पाए हैं। अमेरिका में लगभग 67 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। किन्तु वह मात्र जीविका से जुड़ी है।

अमेरिका में रह रहे प्रवासी भारतीयों के दिल में हिन्दी और अपने देश के प्रति काफी अनुराग है। हिन्दी उनके लिए सम्पर्क या संवाद की भाषा नहीं है किन्तु उनकी अस्मिता का स्वतंत्र पहचान है। दक्षिण ऐशियाई सहयोग संगठन (दक्षेस) इसमें सात देश है। भारत, नेपाल, भूटान, बंगलादेश, श्रीलंका, मालदीव तथा पाकिस्तान इसे SAARC के नाम से भी जाना जाता है। दक्षेस में सभी देशों में हिन्दी न्यूनाधिक मात्रा में इस्तेमाल हो रही है। इसके सारे देश बुनियादी एवं पारम्परिक तरीके से भारत से जुड़े हुए हैं। काफी पहले वे भारत के ही अंग थे। हिन्दी की भी इन देशों में किसी न किसी रूप से अच्छी पकड़ है। दक्षेस देश के सदस्य जितने सक्रिय होंगे, उतना ही उनका आपस में सहयोग बढ़ेगा और उसी अनुपात में हिन्दी का फैलाव होगा। हमारे प्रधानमंत्री के बदौलत दक्षेस में भी हिन्दी का परचम लहरा रही है। नौवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन जोहान्सबर्ग में हुई थी। इससे अफ्रीकी महाद्वीप में हिन्दी का प्रचार–प्रसार काफी हुआ। भारत और भारतीयता के वास्तविक स्वरूप से वहाँ के लोग परिचित हुए। अपने देश की सांस्कृतिक, साहित्यिक और भाषीक क्षमता का प्रसार–प्रचार हुआ।

10–12 सितम्बर, 2015 में भोपाल में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन का अपना एक अलग महत्व रहा है। इसमें विदेश निति में हिन्दी, गिरमिटिया, देशों में हिन्दी, विदेशियों के लिए भारत में हिन्दी अध्ययन की सुविधा, उच्च कोटि की हिन्दी पत्रकारिता एवं संचार माध्यमों में भाषा की शुद्धता एवं संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी पर बल दिया गया।

सर्वोपरि समस्या संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को स्थान दिलाने की है। अभी तक 10 विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हो चूका है। इसमें बहुत सारे परिणाम भी सामने आए हैं। इसीका नजीता मॉरिशस में विश्व हिन्दी सचिवालय तथा अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्व विद्यालय वर्धा इसकी देन है।

अभी तक हम ऐशियाई महाद्वीपों तक ही मूल रूप से सीमित हैं। हमें आगे की लढ़ाई काफी महबूती से लड़नी है। हमें इस बात पर ध्यान देने की जरुरत है कि अभी तक संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी अधिकारिक तौर पर क्यों नहीं पहुँच पाई है।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के जैसा जिस दिन हम संयुक्त राष्ट्र संघ में 129 देशों का समर्थन प्राप्त कर हिन्दी को अधिकारिक रूप में स्थापित कर पाएँगे वही दिन हमारे लिए मील का पत्थर साबित होगा।

समर्थ भाशा और वैज्ञानिक लिपि–

यदि हम इन आँकडों पर विश्वास करें तो संख्याबल के आधार पर हिंदी विश्वभाषा है। हाँ, यह जरूर संभव है कि यह मातृभाषा न होकर दूसरी, तीसरी अथवा चौथी भाषा भी हो सकती है। हिंदी में साहित्य–सृजन की परंपरा भी बारह सौ साल पुरानी है। वह 21 वीं शताब्दी से लेकर वर्तमान २१वीं शताब्दी तक गंगा की अनाहत–अविरल धारा की भाँति प्रवाहमान है। उसका काव्य साहित्य तो संस्कृत के बाद विश्व के श्रेष्ठतम साहित्य की क्षमता रखता है। उसमें लिखित उपन्यास एवं समालोचना भी विश्वस्तरीय है। उसकी शब्द संपदा विपुल है। उसके पास पच्चीस लाख से ज्यादा शब्दों की सेना है। उसके पास विश्व की सबसे बडी कृषि विशयक शब्दावली है। उसने अन्यान्य भाषाओं के बहुप्रयुक्त शब्दों को उदारतापूर्वक ग्रहण किया है और जो शब्द अप्रचलित अथवा बदलते जीवन संदर्भों से दूर हो गए हैं उनका त्याग भी कर दिया है। आज हिंदी में विश्व का महत्त्वपूर्ण साहित्य अनुसृजनात्मक लेखन के रूप में उपलब्ध है और उसके साहित्य का उत्तमांश भी विश्व की दूसरी भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से जा रहा है।

जहाँ तक देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता का सवाल है तो वह सर्वमान्य है। देवनागरी में लिखी जाने वाली भाषाएँ उच्चारण पर आधारित हैं। हिंदी की शाब्दी और आर्थी संरचना प्रयुक्तियों के आधार पर सरल व जटिल दोनों है। हिंदी भाषा का अन्यतम वैशिष्ट्य यह है कि उसमें संस्कृत के उपसर्ग तथा प्रत्ययों के आधार पर शब्द बनाने की अभूतपूर्व क्षमता है। हिंदी और देवनागरी दोनों ही पिछले कुछ दशकों में परिमार्जन व मानकीकरण की प्रक्रिया से गुजरी हैं जिससे उनकी संरचनात्मक जटिलता कम हुई है। हम जानते हैं कि विश्व मानव की बदलती चिंतनात्मकता तथा नवीन जीवन स्थितियों को व्यंजित करने की भरपूर क्षमता हिंदी भाषा में है बशर्ते इस दिशा में अपेक्षित बौद्धिक तैयारी तथा सुनियोजित विशेषज्ञता हासिल की जाए। आखिर, उपग्रह चौनल हिंदी में प्रसारित कार्यक्रमों के जरिए यही कर रहे हैं।

मीडिया और वेब पर हिंदी

यह सत्य है कि हिंदी में अंग्रेजी के स्तर की विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित पुस्तकें नहीं हैं। उसमें ज्ञान विज्ञान से संबंधित विषयों पर उच्चस्तरीय सामग्री की दरकार है। विगत कुछ वर्षों से इस दिशा में उचित प्रयास हो रहे हैं। अभी हाल ही में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा हिंदी माध्यम में एम.बी. ए.का पाठ–क्रम आरंभ किया गया। इसी तरह ''इकोनामिक टाइम्स' तथा ''बिजनेस स्टैंडर्ड' जैसे अखबार हिंदी में प्रकाशित होकर उसमें निहित संभावनाओं का उद्घोष कर रहे हैं। पिछले कई वर्षों में यह भी देखने में आया कि ''स्टार न्यूज' जैसे चौनल जो अंग्रेजी में आरंभ हुए थे वे विशुद्ध बाजारीय दबाव के चलते पूर्णतः हिंदी चौनल में रूपांतरित हो गए। साथ ही, ''ई.एस.पी.एन' तथा ''स्टार स्पोर्ट्स' जैसे खेल चौनल भी हिंदी में कमेंट्री देने लगे हैं। हिंदी को वैश्विक संदर्भ देने में उपग्रह–चौनलों, विज्ञापन एजेंसियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा यांत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है। वह जनसंचार–माध्यमों की सबसे प्रिय एवं अनुकूल भाषा बनकर निखरी है।

आज विश्व में सबसे ज्यादा पढे जानेवाले समाचार पत्रों में आधे से अधिक हिन्दी के हैं। इसका आशय यही है कि पढा–लिखा वर्ग भी हिन्दी के महत्त्व को समझ रहा है। वस्तुस्थिति यह है कि आज भारतीय उपमहाद्वीप ही नहीं बल्कि दक्षिण पूर्व एशिया, मॉरीशस, चीन, जापान, कोरिया, मध्य एशिया, खाडी देशों, अफ्रीका, यूरोप, कनाडा तथा अमेरिका तक हिंदी कार्यक्रम उपग्रह चौनलों के जरिए प्रसारित हो रहे हैं और भारी तादाद में उन्हें दर्शक भी मिल रहे हैं। आज मॉरीशस में हिंदी सात चौनलों के माध्यम से ध
ूम मचाए हुए है। विगत कुछ वर्षों में एफ.एम. रेडियो के विकास से हिंदी कार्यक्रमों का नया श्रोता वर्ग पैदा हो गया है। हिंदी अब नई प्रौद्योगिकी के रथ पर आरूढ होकर विश्वव्यापी बन रही है। उसे ई–मेल, ई–कॉमर्स, ई–बुक, इंटरनेट, एस.एम.एस. एवं वेब जगत में बडी सहजता से पाया जा सकता है। इंटरनेट जैसे वैश्विक माध्यम के कारण हिंदी के अखबार एवं पत्रिकाएँ दूसरे देशों में भी विविध साइट्स पर उपलब्ध हैं।

माइक्रोसाफ्ट, गूगल, सन, याहू, आईबीएम तथा ओरेकल जैसी विश्वस्तरीय कंपनियाँ अत्यंत व्यापक बाजार और भारी मुनाफे को देखते हुए हिंदी प्रयोग को बढावा दे रही हैं। संक्षेप में, यह स्थापित सत्य है कि अंग्रेजी के दबाव के बावजूद हिंदी बहुत ही तीव्र गति से विश्वमन के सुख–दुःख, आशा–आकांक्षा की संवाहक बनने की दिशा में अग्रसर है। आज विश्व के दर्जनों देशों में हिंदी की पत्रिकाएँ निकल रही हैं तथा अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, आस्ट्रिया जैसे विकसित देशों में हिंदी के कृति रचनाकार अपनी सृजनात्मकता द्वारा उदारतापूर्वक विश्व मन का संस्पर्श कर रहे हैं। हिंदी के शब्दकोश तथा विश्वकोश निर्मित करने में भी विदेशी विद्वान सहायता कर रहे हैं।

सारांश यह है कि प्रस्तुत पुस्तक विश्व स्तर पर हिन्दी की शक्ति और संभावना का विश्लेषण करने वाली कृति है। जिसमें हिन्दी का संख्या बल विश्व स्तर पर उसकी उपयोगिता भारत और भारतीय संस्कृति को जानने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम तथा वैश्विकरण और बाजारवादी सक्षम संवाहिता के रूप में हिन्दी का निर्वचन किया गया है। यह हिन्दी जगत से जुड़े हर वर्ग के पाठक के लिए एक जरूरी पुस्तक है। यह पुस्तक अपने निष्पक्ष तर्क एवं आंकड़ों के माध्यम से यह बताती है कि हिंदी विश्व स्तर पर बड़े पैमाने पर मंदारिन को पीछे छोड़ते हुए विश्व की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली सबसे ज्यादा प्रयोग की जाने वाली और सबसे वृहत साहित्यिक रचनाओं वाली भाषा है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1ण हिंदी का विश्व संदर्भ, डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, जी–17, जगतपुरी दिल्ली 110051 संस्करणः तृतीय
2ण हिंदी का वैश्विक परिदृष्य, डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, सामयिकी, 12 सितंबर 2011
3ण हिंदी का वैश्वीकरण, पी.आर. वासुदेवन, पथ भारती, अंकः 1 जुलाई– सितंबर, 2006
4ण हिंदी का वैश्विक परिदृश्य, डॉ. मंजू रानी, मानसरोवर प्रकाशन, डी 402 पार्श्वनाथ, प्लाट नं. 2, सेक्टर –93 ए नोएडा, उत्तर प्रदेश, संस्करण : 2017
5ण हिंदी की वैश्विक उपस्थिति, जनसत्ता, 15 सितंबर 2019